शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2014

अन्धेरे में - एक अनिवार यात्रा

डॉ.संध्या गंगराड़े
प्राध्यापक (हिन्दी)
माता जीजा बाई शासकीय
स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय
इंदौर, म.प्र., भारत

शोध संक्षेप

आत्मपरक कविताओं के कवि मुक्तिबोध जीवनभर जूझते रहे। वे अपनी जिंदगी से ज्यादा अपनी कविताओं को सहेजते थे। उनकी लंबी कविताओं का अवगाहन किसी तिलिस्म से होकर गुजरना है। 'चाँद का मुंह टेढा है' के प्रथम संस्करण में शमशेर बहादुर सिंह लिखते हैं कि, 'मुक्तिबोध की कुछ लंबी कविताएँ आधुनिक हिंदी काव्य की विशिष्ट देन हैं, जिनमें 'अँधेरे में' प्रमुख है। यह कविता देश के आधुनिक जन-इतिहास का, स्वतन्त्रता-पूर्व और पश्चात का एक दहकता इस्पाती दस्तावेज है। इसमें अजब और अद्भुत रूप से व्यक्ति और जन का एकीकरण है। देश की धरती, हवा, आकाश, देश की सच्ची मुक्ति, आकांक्षी नस-नस इसमें फडक रही है...और भावनाओं के गुम्फित स्तरों पर। 'अँधेरे में' मुक्तिबोध की एक ऐसी ही कविता है, जिसमें उनकी काव्यात्मक शक्ति के अनेक तत्व घुल-मिलकर एक महान रचना की सृष्टि करते हैं, जो रोमानी होते हुए भी अत्यधिक यथार्थवादी और एकदम आधुनिक है। और किसी भी कसौटी पर उसको जांचा जाए, मैं कहूँगा कि वह आधुनिक युग की कविताओं में सर्वोपरी ठहरती है।' प्रस्तुत शोध पत्र में मुक्तिबोध की 'अँधेरे में' कविता में अभिव्यक्त विभिन्न संघर्षों की पड़ताल की गयी है।

एक अनिवार यात्रा

'अंधेरे मे', 'राम की शक्ति-पूजा', 'तुलसीदास', सरोज स्मृति, 'कनुप्रिया', 'अंधायुग', 'असाध्य वीणा', 'प्रवाद-पर्व', अग्निलीक, शम्बूक, 'एक कण्ठ विषपायी', 'संशय की एक रात' और 'आत्मजयी' बार-बार पढ़ने पर भी शेष रह जाती है। इनमें 'अंधेरें में' का पाठ और अध्ययन, समझने की प्रक्रिया से गुजरना एक विचित्र संघर्ष से गुजरना है, अपने अंदर उतरना है, जहाँ बहुत थोड़ी रोशनी है, किसी तिलिस्म से गुजरना है, (ये तिलिस्म बाबू देवकीनंदन खत्री का नहीं हैं) यह कवि के साथ किसी खोजी अभियान की यात्रा है, जहाँ सब कुछ विचित्र है परन्तु पहचाना-सा भी है (थोड़ा भयावह भी) और चाह कर भी यात्रा स्थागित नहीं की जा सकती चाहे गोली चले (कहीं गोली चल गई...) चाहे दण्डित किया जाए - आँखो पर काले डैश की पट्टी बांधी जाए, खड़ी पाई की सूली पर टांग दिया जाए या शून्य बिन्दु के अंधियारे खड्डे में गिरा दिया जाए या किसी मृत्यु-दल का जादुई रोमांचकारी करामात हो या विचित्र प्रोसेशन कवि के साथ यात्रा करना ही होती है क्योंकि वह खोजता है, खोज रहा है-

पठार...पहाड़...समुन्दर
जहाँ मिल सके मुझे
मेरी वह खोयी हुई
परम अभिव्यक्ति अनिवार

आत्म-संभवा।1

'परम- आभिव्यक्ति अनिवार ' रचना (कविता नहीं क्योंकि कविता से बहुत आगे की चीज है यह) के आरंभ में अस्तित्व जनाता/अनिवार कोई एक' है। 'अनिवार' (अनिवार्य) ही है इसलिए रचना यात्रा कवि के साथ होती है।

कवि की (जो वाचक भी है) 'अधेंरे मे' की यात्रा के कई पड़ाव हैं और कई दृश्य भी है।

कवि 'अंधेरे में' की यात्रा आरंभ करता है और कोई (जो उसी का प्रतिरूप है) जो स्पष्ट नहीं है केवल अपने क्रिया-कलापों से अपने 'अस्तित्व' का बोध कराता है - वह दिखता नहीं है केवल उसके पैरो की आवाज आती है किसी तिलस्मी खोह में कैद (लोभ की, स्वार्थ की शायद) 'भीत-पार' वह अपने अस्तित्व का बोध भी कराता है तो 'गहन रहस्यमय अंधकार-ध्वनि-सा' (अरूप के लिए अरूप प्रतीक)।

कवि की धड़कन ही जानने को उत्सुक है कि वह कौन है 'सुनाई जो देता, पर नहीं देता दिखाई और अचानक 'भीत' से 'पलिस्तर' खिरता है और एक चेहरा उभरता है-

मुख बन जाता है दीवार पर,
नुकीली नाक और
भव्य ललाट है,
हढ़ हनु,
कोई अनजानी अन-पहचानी आकृति।
कौन, वह दिखाई जो देता, पर
नहीं जाना जाता है।2

पहले केवल ध्वनि, फिर आकृति। आकृति की रेखाओं को देखकर कवि प्रश्न कर उठता है 'कौन मनु ?' आदि पुरूष 'मनु' या कोई और ?

इतने में दृश्य परिवर्तन होता है, यात्रा 'तिलस्मी-खोह' और 'भीत' (दीवार) से निकल कर शहर के बाहर पहाड़ी के उस पार तालाब तक बढ़ जाती है और 'वह' दीखता नहीं है, दीवार पर फिर एक आकृति (शायद मनु) के रुप में, निश्चेष्ट आकृति के रुप में उभरता है 'वह' अब -

और मुसकाता है
पहचान बताता है
किन्तु मै हतप्रभ
नहीं वह समझ में आता।3

'वह' जो अंधेरे में चक्कर लगा रहा था 'वह नहीं दीखता', परन्तु जब 'कौन वह दिखाई जो देता, पर/नहीं जाना जाता है।' फिर वह 'पहचान बताता है' कथा नायक को फिर भी 'नही वह समझ में आता' -

तभी 'तिलस्मी खोह का शिला द्वार
खुलता है धड़ से' धीरे-धीरे4

और निश्चेष्ट आकृति जो पहचान बताती है अब गतिशील हो गई है - और वाचक - नायक (कवि) को प्रभावित भी कर रही है -

तेजो भावमय, उसका ललाट देख
मेरे अंग-अंग में अजीब एक थर-धर।
गौर वर्ण, दीप्त दृग, सौम्य मुख
संभावित स्नेह सा, प्रिय-रुप देखकर
विलक्षण शंका,
भव्य आजानुभूज देखते ही साक्षात्
गहन एक संदेह।5

'वह' अब पूरी तरह दृश्यमान हो गया है, उसका रूप आर्यो की तरह है इसीलिए कवि ने पहले प्रश्न किया था 'कौन मनु ?' "मनु भारतीय इतिहास के आदि पुरुष है। राम, कृष्ण और बुध्द इन्ही के वंशज हैं।"6 उसे देखकर 'विलक्षण शंका भी है और 'गहन एक संदेह' भी क्यों ?

क्योंकि वह 'आत्मा की प्रतिमा' ही थी ' मेरे परिपूर्ण का आविर्भाव ' भी अपने आप को पा

लेना बड़ा कठिन है। इसे बाहरी परिस्थितियाँ सहन नहीं कर सकती इसीलिए 'मौत की सजा दी यहाँ मौत की सजा के लिए कवि ने अभिव्यक्ति के उपकरणों को प्रयुक्त किया है -

किसी काले डैश की घनी काली पट्टी ही
आंखों में बँध गयी,
किसी खड़ी पाई की सूली पर मैं टाँग दिया गया,
किसी शून्य बिन्दु के अंधियारे खड्डे में
गिरा दिया गया मैं7

यहाँ तक यात्रा का प्रथम पड़ाव है। रचना के प्रथम भाग में रचनाकार उस रहस्यमय व्यक्ति की तलाश करता है जो उसी की आत्मा यानी स्वयं का प्रतिरुप है। इस तलाश को कवि ने फैंटेसी के जरिए बुना है क्योंकि स्वयं की पूर्णता की तलाश बिन फैंटेसी के संभव ही नही।

'शून्य बिन्दु के अंधियारे खड्डे में' गिरने के पश्चात् शुरु होती है वाचक-नायक की आगे की यात्रा परन्तु यहाँ वाचक ठहरा है और दृश्य परिवर्तन बाहर से हो रहे हैं। वाचक-नायक 'वह' को नहीं तलाश रहा बल्कि वह ही कवि के मन के द्वार की सांकल बजा रहा है और कवि अब उसे देखे बिना ही पहचानता है (जो दीखता नहीं था, जो मनु जैसा था, जो मुसकाता था, पहचान बनाता था, जो आत्मा की प्रतिमा था) -

पहचानता हूँ बाहर जो खड़ा है!
यह वही व्यक्ति है जी हाँ!
जो मुझे तिलस्मी खोह में दिखा था।8

'वह' कवि का चेतन है कवि उसे पाना चाहता है परन्तु अपनी कमजोरियों की वजह से उस तक पहुँच नहीं पाता, 'वह' कवि के समक्ष 'अवसर-अनवसर' प्रकट होता रहना है।

'वह' जिसका कवि ने प्रथम भाग में बहिर्रूप का (तेजोमय ललाट, गौर-वर्ण, दीप्त-दृग', सौम्य मुख) परिचय कराया था अब उसके गुणों का परिचय कराता है -

अरे, उसके चेहरे पर खिलती हैं सुबहें
गालों पर चट्टानी चमक पठार की
आँखों में किरणीली शांति की लहरें
उसे देख, प्यार उमड़ता है अनायास।9

खिलती सुबह जागरण का संदेश देती है, तो चट्टानी चमक दृढ़ता का और किरणीली शांति सहयोग का। परन्तु अपनी मध्यम वर्ग की कमजोरियो के कारण उससे मिलने से वह कतराता है क्योंकि 'वह' उससे अपेक्षा रखता है, 'वह' उम्मीद करता है कि वर्ग की खाई को वाचक-नायक (आम आदमी को प्रतीक किन्तु चेतन प्रज्ञा वाला) पाट देगा -

कहता है "पार करो पर्वत-संधि गह्वर
रस्सी के पुल पर चलकर
दूर उस शिखर-कगार स्वयं पहुँचो"10

परन्तु वाचक शिखर पर पहुंचना नहीं चाहता उसे डर लगता है ऊँचाइयों से। वाचक-नायक (कवि) के मन में द्वन्द्व चलता है, एक ओर उसने भविष्य का नक्शा दिया है और दूसरी ओर वाचक की मध्यमवर्गीय कमजोरिया है परन्तु वही अपनी 'सत्-चित्-वेदना' से निर्णय लेता है-

नही-नहीं, उसको मैं छोड़ नहीं सकूँगा
सहना पड़े - मुझे चाहे जो भले ही11

वाचक-नायक के निर्णय करने में देर से 'वह चला जाता है। और फिर खो जाता है उसकी 'पूर्णतम परम अभिव्यक्ति' जो उसकी गुरु (मार्गदर्शक) है।

तीसरा खण्ड स्वप्न और जागृति का सम्मिश्रण है। जो स्वप्न में है वही जागृति में और जागृति में वही स्वप्न में। कवि या वाचक विचित्र दृश्य देखता है - पहले ताल्स्यताय और फिर

ताल्स्यतायनुमा, प्रोसेशन, बैण्ड-दल, काले-काले बलवान घोड़ो का जत्था, केवेलरी कर्नल, ब्रिगेडियर, जनरल, मार्शल, सेनापति, सेनाध्यक्ष, प्रकाण्ड आलोचक, विचारक, कवि-गण, मन्त्री, उद्योगपति, विद्वान यहाँ तक कि कुख्यात हत्यारा डोमाजी उस्दात भी।

स्वप्न में तीन पक्ष है - तालस्यताय या ताल्स्यतायनुमा अर्थात सामाजिक अन्तर्विरोधों का लेखक पहला पक्ष है। दूसरा पक्ष हैं पूँजीपति वर्ग का जिसने अपनी पूँजी के बलबूते पर सत्ता, समाचार, साहित्यकार, सेना और हत्यारे डोमाजी उस्ताद पर अपना आतंक फैला दिया है और तीसरा पक्ष है, मैं-अर्थात आम आदमी जिससे पूँजीपति वर्ग भयभीत है क्योंकि क्रांति यहीं से होगी इसीलिए वे नहीं चाहते कि कोई आम आदमी उनको देखे -

मारो गोली, दागो स्याले को एकदम,
दुनिया के नजरों से हटकर
छिपे तरीके से
हम जा रहे थे कि
आधीरात- अंधेरे में उसने
देख लिया हमको
व जान गया वह सब
मार डालो, उसको खत्म करो एकदम।12

स्वप्न टूटने पर भी स्वप्न का सच कवि को याद आने लगता है और वह महसूस करता है कि-

गहन मृतात्मांएँ इसी नगर की
हर रात जुलूस में चलती
परन्तु दिन में
बैंठती हैं मिलकर करती हुई षडयंत्र13

विभिन्न दफ्तरों, कार्यालयों, केन्द्रों में, घरों में षड्यन्त्रकारियों को उनके स्वार्थ और सत्तालोलुप कार्यो को देख लेने की सजा हमेशा ही आम आदमी भुगतता आया है-

हाय-हाय, मैने उन्हे देख लिया नंगा,
इसकी मुझे और सजा मिलेगी।14

चतुर्थ खण्ड और दृश्य परिवर्तन। सारी रात बीतगई प्रातः के चार बज गये - सुबह अभी दूर है वह सुबह जो प्रकाशमय हो, जागृत हो, चेतन हो।

मार्शल-ला लगा दिया गया, चारों ओर जन-क्रांति को दबाया जा रहा है। स्वार्थ और लोभ ने भय और कायरता ने न क्रांति को फैलाव दिया और न ही सर्वहारा वर्ग का उद्धार ही हो सका। यहाँ मुक्तिबोध ने एक पात्र गढ़ा -'सिरफिरा जनसमाज की नजरों में सिरफिरा क्योंकि वह जाग गया था, (जो जागत है वह रोवत है) वह कोई 'पद' (भक्तिकालीन पद्धति कबीर?) गा रहा था, 'आत्मोद्बोधमय' (सुनो भाई साधो)। स्वयं को ही बोध दे रहो था या समाज को आइना दिखा रहा था-

अब तक क्या किया
जीवन क्या जिया,
ज्यादा लिया और दिया बहुत-बहुत कम
मर गया देश अरे जीवित रह गये तुम....15

पागल कवि की प्रतिच्छाया-सा लगता है। वह सोचने लगता है कि मेरे ही कारण ही यह संकट आया है -

आज उस पागल मे मेरी चैन भुला दी,
मेरी नींद गँवा दी।16

पागल कौन ? जो क्रांति की बात करता है, जो अपने बहिर से संघर्ष करता है, जो सामान्य से ऊपर उठ जाता है, जो साधारण सुख-दुःख से असंपृक्त हो, सचाई को निर्मम तरीके से कहने मे सक्षम हो, जो दण्ड से भयभीत न हो (जो कबीर

हो, सुकरात हो)। इसीलिए कवि-वाचक-नायक जो सचेतन है 'पागल' के कथन से विचलित हो जाता है और उसकी नींद उड़ जाती है उसे लगता है-

कोई छिपी वेदना, कोई गुप्त चिन्ता
छटपटा रही, छटपटा रही है।17

यही छटपटाहट यात्रा के अगले चरण अर्थात् पाँचवे खण्ड में भी निरन्तर है। छटपटाहट के साथ वाचक-नायक को संकेत मिलता है बरगदपात के रुप में वह सोचता है 'क्या वह इशारा,/क्या वह चिट्ठी है किसी की ?

कौन-सा इंगित ? और नायक भागता है, धूम जाता है कई मोड़ और उसे दिखाई देता है- 'स्वप्न सरीखा' और वह देखता है 'मणि तेजस्क्रिय रेडियो-एक्टिव रत्न' उन्हे देखने पर उसे भान होता है-

दीप्ति में वलयित रत्न वे नहीं हैं
अनुभव, वेदना, विवेक-निष्कर्ष
मेरे ही अपने यहाँ पड़े हुए हैं।18

उसे एहसास होता है कि अपनी मध्यवर्गीय कमजोरियों के कारण अपने ही अनुभवों, वेदना और विवके निष्कर्षो को वह सक्रिय नहीं कर पाया है वे यहाँ निष्क्रिय है इसलिए 'पड़े हुए हैं'

छटवें खण्ड में वाचक-नायक अपराध बोध से भर जाता है कि उसने अपने बहुमूल्य विवके-निष्कर्षो 'गुहावास' दे दिया -

जनोपयोग से वर्जित किया और
निषिध्द कर दिया
खोह में डाल दिया19

क्योंकि खतरे हैं वही मध्यवर्गीय भय कि बच्चे भीख माँगते। वाचक-नायक के साथ फैंटेसी पुनः सक्रिय होती है और तेज गति से द्रश्य परिवर्तन होता है 'सीन बदलता है' रात्रि में सुनसान चौराहा, गेरुआ घण्टाघर, खम्भों पर 'बिजली की गरदने लटकी 'शर्म से जलते हुए बल्बों के आस-पास- बेचैन खयालों के पंखों के कीड़े' सुनसान चौराहा- जहाँ विचित्रताओं को देख वह भागता है।

भागता मैं दम छोड़
घूम गया कई मोड़20

और आकर्षण में बँधा वह तिलक की पाषाण मुर्ति देखता है जिसकी ' आँखों में बिजली के फूल सुलगते' हैं परन्तु फिर वह देखता है अतिशय चिन्ता के कारण ही उस 'भव्य ललाट की नासिका में से/बह रहा खून न जाने कब से वाचक-नायक को लगता है कि देश की चिन्ता के कारण यह हो रहा है। देश की चिन्ता में जिन्होनें लाठियाँ खाई, जेल गये वे देश की वर्तमान स्थिति से, स्वातन्‍योत्तर भारत में आम आदमी की दशा से चिन्तित है और कवि अपने पूर्व पुरुष को पितः कहते हुए आश्वस्त करता है -

हाय-हाय, पितः पितः ओ
चिन्ता में इतने न उलझो
हम अभी जिन्दा हैं जिन्दा
चिन्ता क्या हैं21

और भागता हुआ - सक्रियता से भागता हुआ नायक द्वन्द्व में फँसा नायक, मध्यवर्गीय खोल में बँधे नायक के अन्दर -

भयानक जिद कोई जाग उठी मेरे भी अन्दर
हठ कोई बड़ा भारी उठ खड़ा हुआ है।22

तिलक की मूर्ति के बाद उसे सर्दी में बोरे को ओढ़े कोई दिखाई देता है, यह भी रक्तालोकस्नात पुरुष की तरह ही उसे परिचित लगता है, परन्तु उसे देखा था पाया नहीं था-

ध्यान से देखता हूँ - वह कोई परिचित
जिसे खूब देखा था, निरखा था कई बार
पर, पाया नही था।23

कवि को या कहें वाचक-नायक को तलाश, पाने की चाह यात्रा के आंरभ से ही है-किसी प्रेरक किसी पूर्ण पुरुष की, देव की, वह कभी मनु है तो कभी तालस्यताय, कभी तिलक तो कभी गाँधी। गाँधी ही उसे सचेत करते हैं कि कोई भी जो जोरदार आवाज उठा दे मसीहा नहीं होता बल्कि जनता ही भावी का उद्‌गम है-वे कह रहे हैं -

मिट्टी के लोंदे में किरगीले कण-कण
गुण है, -
जनता के गुणों से ही संभव
भावी का उद्भव..24

भावी का उद्भव...और वह भविष्य का जन, शिशु रुप में वाचक को देते हैं क्योंकि यह 'अब तक मेरे पास चुपचाप सोया हुआ यह था।'

सोया था, निष्क्रिय था, सक्रिय नहीं था, उसे सक्रिय करने और सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी वे देते हैं और कहते हैं - 'संभालना इसको, सुरक्षित रखना' यह शिशु वाचक का अपना परिचित है, उसके अंदर का ही भंयकर क्रोध है, वह अपने (मध्यवर्गीय) भय के कारण जिसे दबाता आया है वही है, यह। इसीलिये उसके रोने, चीखने से वह घबराता नहीं खुश होता है -

किन्तु न जाने क्यों खुश बहुत हूँ।
जिसको न मैं इस जीवन में कर पाया,
वह कर रहा है।25

शिशु 'सूरजमुखी-फूल-गुच्छे' में बदल जाता है, उन सूरजमुखी स्वर्ण-पुष्पों से प्रकाश-विकिरण होता है और पुष्प-गुच्छ का स्थान ले लेती बन्दूक। वाचक आगे बढ़ता है 'अंधेरे में' की यात्रा जारी है शिशु हो, पुष्प गुच्छ हो या बन्दूक अपनी परम अभिव्यक्ति की खोज 'अनिवार' है और ऐसे में वाचक को पुनः अपना परिचित दिखलाई देता हैं परन्तु मृत दशा में क्योंकि वह कलाकार है, कलाकार कार्यक्षमता से वंचित, सपने देखने में माहिर, अपने वर्ग से कटा है इसीलिए अपना ज्ञान किसी को नहीं दे पाया, मारा गया (ब्रह्म राक्षस की तरह-दो कठिन पाटों बीच पिस गया) तब वाचक का स्वयं से सवाल है-

मैं क्या करता था अब तक,
भागता फिरता था सब ओर।26

इस एहसास के साथ वह 'सकर्मक सत् चित्-वेदना भास्वर' हो नये दोस्त और सहचर खोजता है।

तभी सत्ताधारी वर्ग (अन्दर का भय) उसे घेर लेता है तरह-तरह की यातनाएँ देता है वह इनसे ऊपर उठकर अपने मन को मजबूत बनाता है उसके फटे हुए मन की जेब में पत्र रूप में गिरता है और वह अनुभूत करता है कि परिवर्तन की चाह सत्ताधारी और पूँजीपतियों की मिलीभगत का विरोध सब जगह है-

हम कहाँ नहीं हैं
सभी जगह हम।

इसी विश्वास के कारण वह कह उठता है-

विचित्र रूपों को धारण करके
चलता है जीवन-लक्ष्यों के पथ पर।27

लक्ष्यों के पथ पर यात्रा है सातवें खण्ड की। लक्ष्य पाने के खतरे हैं, खतरे जो 'छाया-मुख' हैं पीछे नहीं छोड़तें इसीलिए इन खतरों से दूर साथी खोजने होंगे, जो आंदोलनकारी भूमिगत हो गये थे उन्हें ढूंढना होगा। उनके संदेश, सुझाव आते रहते हैं।

अचानक विचित्र स्फूर्ति से मैं भी
जमीन पर पड़े हुए चमकीले पत्थर
लगातार चुनकर
बिजली के फूल बनाने की कोशिश
करता हूँ।28

'बिजली के फूल' संघर्ष, ऊर्जा, क्षमतावान, प्रकाशवान होने का संकेत है और कमियों का भान भी है वाचक को वह कह उठता है-

क्या कहूँ
मस्तक-कुण्ड में जलती
सत्-चित्-वेदना-सचाई व गलती
मस्तक-शिराओं में तनाव दिन-रात।29

लक्ष्य को पाने के लिए 'अरुण कमल-पाने के लिए, -विद्रोह करना होगा, भाषा को आमजन की भाषा बनाना होगा लक्ष्य पाने के लिए 'रंगीन पत्थर फूलों' से काम नहीं चलेगा। परम्पराओं को धार्मिक परम्पराओं को, सांमती गढ़ों को तोड़ना होगा तब कहीं लक्ष्य मिलेगा। कठिन रास्तों से गुजरना होगा, विरोधों के बीच आगे बढनें पर ही लक्ष्य मिलेगा-

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे
उठाने ही होंगे।
तोड़ने होंगे की मठ और गढ़ सब।
पहुँचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार
तब कहीं देखने मिलेंगी बाहें,
जिनमें कि प्रतिपल कांपता रहता
अरुण कमल एक.....30

अरुण कमल अकेले नहीं पाया जा सकता। इसके लिए तो सबको इकट्ठा होना होगा। वाचक-नायक अपनी कमजोरियों के बीच पाता है -

पाता हूँ सहसा-
अंधेरे की सुरंग-गलियों में चुपचाप
चलते है लोग-बाग
दृढ़-पद गंभीर
बालक-युवा गण
मंद-गति नीरव
किसी निज भीतरी बात में व्यस्त हैं
कोई आग जल रही तो भी अन्तःस्थ।31

यहाँ धीरे-धीरे वाचक-नायक को यह एहसास होने लगता है कि विद्रोह अकेले नहीं होता सबके साथ होता है। अकेले तो बौद्धिक जुगाली होती है। इस विचार के आते ही वह अपने अन्दर की शक्ति को पहचानता हैं। उसे कोई चुपचाप पर्चा दे जाता है और उस पर्चे में भी वही है जो वाचक की स्वयं की धारणा है। यहाँ मुक्तिबोध (संभवतया) यही कहना चाहते हैं कि अपनी ताकत को पहचानना आसान नहीं है और जब पहचान लेते हैं तो सर्वत्र वही दिखलाई देती है। वह जो अपने वर्ग से निकलना नहीं चाहता, जो आंरभ में शिखरों की यात्रा नहीं करना चाहता, जो डरता है ऊंचाइयों से, वही अब-

पर्चा पढ़ते हुए उड़ता हूँ हवा में
चक्रवात-गतियों में घूमता हूँ नभ पर
जमीन पर एक साथ
सर्वत्र सचेत उपस्थित।
प्रत्येक स्थान पर लगा हूँ मैं काम में,
प्रत्येक चैराहे, दुराहे व राहों के मोड़ पर
सड़क पर खड़ा हूँ
मानता हूँ, मानता हूँ, मनवाता अड़ा हूँ।32

वर्ग मुक्ति के कारण वाचक-नायक में यह साहस आता है। पहले उस रक्तालोक स्नात पुरुष का दिया नक्शा वह सहन नही कर सकता था -

भविष्य का नक्शा दिया हुआ उसका
सह नहीं सकता।
वही अब विश्व नक्शे को देखता है -
और अब दिक्काल-दूरियां
अपने ही देश के नक्शे-सी टंगी हुई
रंगी हुई लगती।33

वह अपने को 'परिणत पाता है और द्रढ़तापूर्वक सत्ता सामंत वर्ग को ललकारता है-

कविता में कहने की आदत नहीं पर कह दूँ

वर्तमान समाज में चल नहीं सकता।
पूँजीं से जुड़ा हुआ ह्रदय बदल नहीं सकता
स्वातन्त्रय व्यक्ति का वादी
छल नहीं सकता मुक्ति के मन को,
जन को।34

आठवाँ खण्ड - पूँजीपतियो और सत्ताधारियों के विरुद्ध क्रांति के परिणाम स्वरुप 'कही आग लग गयी, कहीं गोली चल गयी' क्रांति को दबाने प्रयास। यह क्या ? जिनसे उम्मीद है परिवर्तन की, सत्ता से विरोध की वे 'सब चुप साहित्यिक चुप और कवि जन निवक्/िचिन्तक, शिल्पकार, नर्तक चुप हैं'

यही नहीं -

भव्याकार भवनों के विवरो में छिप गये
समाचार-पत्रो के पतियों के मुख स्थूल
गढ़े जाते संवाद
गढ़ी जाती समीक्षा
गढ़ी जाती टिप्पणी जन-मन-उर-शूर।
बौद्धिक वर्ग है, क्रीत दास'35

ऐसे में आम जन जाग गया है दादा का सोंटा, कक्का की लाठी, बच्चे की पेंपे, जड़-चेतन सब सक्रिय हो गये-

एक-एक वस्तु या एक-एक प्राणाग्नि बम है,
ये परमास्त्र है, प्रक्षेपास्त्र है, यम है।
युग बदल रहा है, युवकों में व्यक्तित्वान्तर हो रहो है।36

वाचक पुनःस्वप्न-भंग की स्थिति में आता है और अपने को अकेला पाता है, साथ ही उसे कहीं कोई उजास भी दिखाई देता है। सुबह वह गैलरी में खड़ा होता है उसे फिर वही व्यक्ति दिखाइ दे जाता है जिसे गुहा में देखा था और वह पुनः भीड़ में खो जाता है। यह व्यक्ति वाचक की परम अभिव्यक्ति है, गुरु है, और वाचक को उसकी खोज है और जो यात्रा 'अंधेरे में' से आंरभ होती है वह यात्रा अंनत है, निरन्तर है क्योंकि वह अभी भी खोज रहा है-

खोजता हूँ पठार.....पहाड़.....समुन्दर
जहाँ मिल सके मुझे
मेरी वह खोयी हुई
परम अभिव्यक्ति अनिवार
आत्मसंभवा37

यह यात्रा है 'अस्तित्व जनाता/अनिवार कोई एक' से 'परम अभिव्यक्ति अनिवार/आत्म संभवा' तक की। यात्रा एक खोजी अभियान है, 'मैं' से 'वह' तक की यात्रा है, जिसमें 'मैं' और 'वह' अभिन्न है 'मैं' का ही प्रतिरुप 'वह' है परन्तु वह आदर्श रुप है -

अनरखोजी निज-समृद्धि का वह परम-उत्कर्ष
परम अभिव्यक्ति...
मैं उसका शिष्य हूँ -
वह मेरी गुरु है
गुरु है।38

जिसे 'मैं' पाना चाहती है और उसका 'सजल उर-शिष्य' (ब्रह्म राक्षस) होना चाहता है परन्तु वह फिर खोजता है और 'मै' उसे खोजता रहता है, खोजता रहता है सर्वत्र.....हर गली में, हर सड़क पर।

निष्कर्ष

'अंधेरे में' की इस यात्रा में जो आलोक मैने लिया है मुक्तिबोध के आलोक संकेत में कहूँ तो 'नीली गैस लाइट' , 'दीप्ति वलयित् रत्न', 'बिजली के फूलों की भांति ही', ' चाँदनी में कोई दीया सुनहला' गैलरी में फैला है सुनहला रवि छोर- वह अब तक 'अंधेरे में' पर विद्वानों के चिन्तन का आलोक है। डॉ.रामविलास शर्मा, डॉ.नामवर सिंह, अशोक चक्रधर, परमांनद श्रीवास्तव और

नंदकिशोर नवल ने विशेष रूप से इस यात्रा में मुझे रोशनी दिखाई है।

संदर्भ ग्रन्थ

1.मुक्तिबोध रचनावली - 2 सं. नेमीचन्द्र जैन, पृष्ठ 355

2 पृष्ठ 321, 3 पृष्ठ 321, 4 पृष्ठ 322, 5.पृष्ठ 322

6.कामायनी, आमुख, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ 404

7.मुक्तिबोध रचनावली - 2 सं. नेमीचन्द्र जैन, पृष्ठ 323

8. पृष्ठ 323-24, 9 पृष्ठ 324, 10. पृष्ठ 324, 11. पृष्ठ 325

12 पृष्ठ 330, 13 पृष्ठ 330, 14.पृष्ठ 331, 15.पृष्ठ 333

16. पृष्ठ 334, 17 पृष्ठ 335, 18. पृष्ठ 336, 19. पृष्ठ 336, 20 पृष्ठ 338, 21 पृष्ठ 339, 22. पृष्ठ 339, 23. पृष्ठ 340, 24. पृष्ठ 341, 25. पृष्ठ 342, 26. पृष्ठ 344, 27. पृष्ठ 346, 28 पृष्ठ 347, 29 पृष्ठ 348, 30 पृष्ठ 348, 31. पृष्ठ 349, 32. पृष्ठ 350, 33. पृष्ठ 350, 34. पृष्ठ 350, 35. पृष्ठ 351, 36. पृष्ठ 352, 37. पृष्ठ 355, 38. पृष्ठ 355